

ॐ ह्रीं

अथ

1742

आर्य समाज का

ॐ

ASIA ARCHIVES



ॐ ह्रीं ॐ का

तामरुपुष्पस्रग्ध्र ॥ इति कुट्टि आसनम् ॥ आयानं चित्तवाधव चित्तामरुपुष्पिना
महान् । चित्तकूलं ह्येता नन आगच्छु चित्तवाधव ॥ आयानं ॥ हस्तार्ध ॥ धनं
जजमका स्नानं धूप दीप स्नानं ॥ नमस्कृ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं महः ॥ चि
तुर्धनं हस्तार्धं व निवलाकसंगच्छु नि ॥ वस्तुवाक्कयादाव विद्यावतियकं ॥ अस्म
न चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ धनं चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ धनं चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥
युजा विधानं गत्सर्वं यत्रिपूर्वमस्तु ॥ धनं चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ धनं चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥
युष्मरुज्जन ॥ मासनं दश ॥ युष्मरुज्जनं सर्वदशां गन्धाय चन्दनादि हि ॥ चि
तवाधवनाथं व युष्मरुज्जनं माम्भर्तु ॥ आय ॥ दशकियायादाकटात्त नय ॥

उल्लयागं अर्घ्यागं ॥ न्यासयाय सन्ध्याया सुति ॥ उल्लयागं अर्घ्यागं ॥
सुति आत्मयुजा ॥ यूनः यागं ॥ धवजं वलासं कीवयागं खवलासं उल्लया
दथु समययाग ॥ यागसुखा चन्दना द्वादशयुष्मन्नमः ॥ ॥ लयने यात ४ दु
गायु ४ ॥ वाक् ॥ ह्येताया सनं स्नाय चित्तवाधव निवेदयत् ॥ कूलचिणुसमास्ना
य आयानं चित्तवाधव ॥ धववाक्कयत्तयावकोटात्त सलयनं लाय स्वट्टेद
॥ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ हामल कूलचिणुर्धनं ॥ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥
नन ॥ वाक् ॥ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥ चित्तवाधव कूलचिणुर्धनं ॥
मरुकूलचिणुर्धनं ॥ गन्धाय चन्दना द्वादशयुष्मन्नमः ॥

मिन्नस्यदकहाग ॥ चिष्टुच्यारसमं नयनिलिगाम् ॥ आत्मवाम ॥ निगद आक
कुरु ॥ सुदधननडाथयकावकाउठ कुरुतिसगाद ॥ कं कुरुवाकलं कुरुयकं ध
दिदर ॥ ला ॥ दा ॥ धन ॥ सावज ॥ कासि ॥ धनं गस्य आगनगावकं न ॥ ॥ ऊ ॥ मन
स्यदा ॥ उ ॥ आद वं ॥ सुदधन ॥ ग ॥ पिगामरु ॥ छेव ॥ यपिगात रुसंवय ॥ ग्यानि
॥ ग्यानिमफानी ॥ आयानं ॥ कुरुमपुल ॥ अयूगा ॥ आमगरीच ॥ ऊ ॥ वा ॥ सर्वगा
कलं ॥ न ॥ नयिर्गुमयादलं ॥ अ ॥ की ॥ यं ॥ कुरुमासिग ॥ पिगर्वं ॥ शसुगा ॥ ऊ ॥ य ॥ मा ॥ रु
॥ शरु ॥ छेवय ॥ गुनु ॥ स्वसुजवन्धुना ॥ ऊ ॥ या ॥ नं ॥ वा ॥ ध ॥ वा ॥ सु ॥ गा ॥ सम ॥ वि ॥ सम ॥ रु ॥
गीना ॥ यू ॥ द ॥ ना ॥ वि ॥ नि ॥ कि ॥ ना ॥ ॥ किया ॥ ला ॥ य ॥ ग ॥ ना ॥ ऊ ॥ व ॥ अ ॥ स ॥ ध ॥ य ॥ ग ॥ व ॥ रु ॥ थ ॥ ॥ वि

आमगर्गेश्व ॥ रु ॥ ना ॥ रु ॥ ग ॥ क ॥ ल ॥ म ॥ म ॥ रु ॥ भा ॥ द ॥ क ॥ व ॥ पि ॥ छु ॥ ध ॥ न ॥ वी ॥ द ॥ या ॥ त्य ॥ व ॥
म ॥ दि ॥ ॥ र्द ॥ आ ॥ या ॥ ग ॥ य ॥ सी ॥ म ॥ रु ॥ ल ॥ पि ॥ ध ॥ ऊ ॥ य ॥ न ॥ ॥ ॥ या ॥ व ॥ थ ॥ व ॥ व ॥ व ॥ ला ॥ या ॥ आ ॥ स ॥ न ॥ न
ल ॥ म ॥ ॥ पि ॥ छु ॥ स ॥ क ॥ ल ॥ ॥ द ॥ ना ॥ या ॥ रु ॥ द ॥ वा ॥ ले ॥ ॥ पि ॥ छु ॥ ग ॥ व ॥ क ॥ न ॥ क ॥ का ॥ य ॥ ॥ अ ॥ उ ॥
वा ॥ ला ॥ रु ॥ व ॥ ल ॥ य ॥ मा ॥ स ॥ न ॥ क ॥ रा ॥ दि ॥ य ॥ ॥ ॥ उ ॥ य ॥ म ॥ न ॥ य ॥ ॥ ग ॥ य ॥ अ ॥ स ॥ न ॥ पि ॥ न ॥ थ ॥ द ॥ श ॥ उ ॥ थ ॥
ना ॥ म ॥ रु ॥ क ॥ ल ॥ पि ॥ छु ॥ ग ॥ य ॥ न ॥ रु ॥ वि ॥ न ॥ न ॥ सी ॥ स्व ॥ थ ॥ ॥ क ॥ दा ॥ उ ॥ स ॥ ग ॥ य ॥ ल ॥ य ॥ न ॥ स ॥ न ॥ ॥ पि ॥ ना
म ॥ रु ॥ उ ॥ थ ॥ ना ॥ म ॥ ॥ य ॥ पि ॥ ना ॥ म ॥ रु ॥ क ॥ थ ॥ ना ॥ म ॥ ॥ ग्या ॥ नि ॥ ॥ या ॥ उ ॥ स ॥ म ॥ रु ॥ ला ॥ उ ॥ थ ॥ जा ॥ थ ॥ ना
म ॥ रु ॥ क ॥ ल ॥ पि ॥ छु ॥ ग ॥ य ॥ न ॥ रु ॥ वि ॥ न ॥ न ॥ रु ॥ थ ॥ ॥ ॥ नि ॥ ला ॥ द ॥ क ॥ वि ॥ य ॥ ॥ रु ॥ म ॥ ला ॥ ॥ य ॥ ऊ ॥
द ॥ ॥ या ॥ रु ॥ ॥ पि ॥ रु ॥ नि ॥ ला ॥ द ॥ क ॥ द ॥ रु ॥ ॥ नि ॥ ला ॥ द ॥ क ॥ द ॥ रु ॥ ॥ न ॥ न ॥ पि ॥ छु ॥ ग ॥ य ॥ ना ॥ म ॥ रु ॥

शिवलोकं स्रुञ्जनि ॥ अस्मिन् विगमजनामकलविषुष्टाक्षं अलिवलिगिलाद
 काद्यस्वधा ॥ १ ॥ ध्वनर्थं धु (गा) ठ स, रु ना द, हा स, ला, धी, आ द ॥ विगममहादक
 दयं, तिलायादयसंशर्ग । ननयिषुमयादहं, विष्कृलाकं स्रुञ्जनि ॥ अस्म
 न् विगममहादय विगममहादयथानामकलविषुष्टाक्षं अलिवलिगिलादकाद्यस्व
 धा ॥ २ ॥ ध्वनर्थं धु (गा) ठ स, रु ना द, हा स, ला, धी, आ द ॥ ययिगामदकं दहं, गिला
 यादयसंशर्ग । ननयिषुमयादहं, वक्रलाकं स्रुञ्जनि ॥ अस्मन् विगम
 दयं ययिगाममहादयथानामकलविषुष्टाक्षं अलिवलिगिलादकाद्यस्वधा ॥
 ३ ॥ ग्यानि (गा) ठ स, रु ना द, हा स, ला, धी, आ द ॥ ननयिषुमयादहं, स्वर्ग

गञ्जनि (गा) ठ स ॥ सर्वग्यानि (गा) ठ स, अलिवलिगिलादकाद्यस्वधा ॥ ४ ॥
 यिषुसयनन ॥ सुगन्धवन्दनं यव, वन्दनं तिलकं धु रं । सर्वपापविनिर्मु
 कं, विष्कृलाकमदीयन ॥ आद्याय, उजमका ॥ आद्याय सर्ववस्त्राणां वि
 गमयिषुदवना । गृहगृहं वृत्ताद्याय, वक्रलाकमदीयन ॥ यिषुस्थान ॥
 यम्यकं रुद्रयाजादि, नानाधूष्यसमालिका । गृहं यिषुनं सर्व, गिव
 लाकमदीयन ॥ रुलादि ॥ यथाकं व विधनव, नानारुलसमाशर्ग । वृ
 द्नाम्युलकं यव, गृहगं यिषुदवना ॥ इदयाग ॥ यययवयुयाग्यु
 द (शा) यममृगाजथा । यिवयाकावस्रुष्टा, गृहगयिषु रिष्वधा ॥

उल्लघात ॥ निर्मालं कलघातस्य, पूर्णयानुवधानि च । गृह्णानि तानि चित्वा शु-
 गृह्णानि चित्वा हि ॥ १ ॥ साधु वगाव ॥ भाद काद्यानि सन्धानि, सर्वान् श्रुते
 धीवय । गृह्ण गृह्ण मयि ह, चित्वा हि ॥ गृह्ण गं सध ॥ मय्यया ॥ आनन्द
 मदिना झा स, वाचू लीयाय दानि च । सुसकु हानि रुडानि, गृह्ण गं चित्वा हि
 ॥ २ ॥ धूय ॥ आहान सध दवानां, धूय आभाय कोनर्ण । गृह्ण गं चित्वा हि
 हि ॥ धूय, धूयं लेलाय वागिर्ण ॥ दीय ॥ आतिवृत्तं न भा रुकि, कलनीया
 वक्कानि च । सर्वान् कर्तव्यं चैव, चित्वा हि ॥ दीय ॥ कर्ण ॥ रुतयुग्म गाम्बू
 ॥ ३ ॥ चित्वा हि ॥ मणुल यादाव सानर्क दादा वाय ॥ कृष्ण, रु

मणुल यादाव सानर्क दादा वाय

1742

आस नवविंशतिकृत्ति वा प्रसन्नारु
ट. काकाग। ननु स्येव ॥ साय ॥ दक्षिण ॥ निर्विघ्नं यया नु ॥ ॥ किं युजा ॥
जायताया धर्मं सिद्धि विद्यमानमाल ॥ दिगन्तमूर्ति वाक्क विय ॥ कल यिषुस
इष्टा यिषुथवर्क ल वन्दनादिसमस्तं गयक ॥ लिखायानं विगन्तमूर्तिया
दत्तया वाक्क लस्य युजाया उक्त ॥ अलिव लि पागानं श्वनसस्त ॥ दक्षिण
धनलीलासथं द्युति राजनकाय, उडमानन, वीजजनस्तु रान, वीजज
नस्य, थवथववास विराय वा प्रकाया वरा समस्त ॥ हवर्न नपुलदयक,
थयतिराजन, मणुलसर्ग ॥ रामल, कृष्ण, लक्ष्मणाद, युगिराजनेवा कया
थ ॥ सनुस्तसर्वदिवानां, अंगराग निवदथ न् । आयानं यितथा दवकु

अनं यतिराजनं ॥ विसर्जनया दाव, कल यिषुसलूय ॥ ॥ रुनादव
ला, श्व, जादहायकमनु ॥ नैकीणीं शुभं समस्तमनु यीति सिंहासनयी,
ठियी (०) ययीति कृताय कुरु सन्धा ॥ होयसं दारु दिव्य सिद्धि समयव
यादका शुभं शुभं लीला ॥ रुनाद, ला, श्व, जाद निलादक वियमनु ॥ नैकीणी
शुभं शुभं ॥ सुनादवी अ नन्द के जवी यितना दण्डयमनु (गा) उ, अम
कनाम शुभं वक्रलाक संयाय, भादं कुरु २ शुभं ॥ स्वाहा शुभं शुभं लीला ॥
रुनाद शुभं ला, श्व, जाद ॥ शुभं सुनादवी शुभं आनन्द के जवी यितना
दण्डय मनु (गा) उ, अम क शुभं नाम विष्णु शुभं लाक संयाय, भादं कुरु २

सुं॥ स्वाहा ॥ हुनादला ध्वंजाद ॥ ५ सुं॥ सुजादवीजानन्दरुचवीचिन
सुं॥ नादगुण उयमन्युगागु अमूक सुं॥ नाम नूदलाक संयुक्त भा कं
सुं॥ कुरु सुं॥ स्वाहा ॥ सुं॥ सुं॥ अथा सुं॥ निनिधिमासाय अथैवधिना
यन सुं॥ न॥ यानिदवानिसवानि सुं॥ अथयुक्तुङ्गनात्रियि ॥ रुद्रने
सर्वदवा सुं॥ नो॥ पितृकिः समुतायय पितृनासर्वदवाय पितृपुत्र्य
पुत्रकान् ॥ ग्यानिगागुअसर्वालि उवाचवाधवासुगा सुं॥ सर्वमायानि
रुफानि नमस्तु पितृदवगा ॥ हुनाधिकअसर्वालि उदिहिदमुक्तिद
कं ॥ सर्वतयूवगाथय दमगां पितृदवगा ॥ रुद्रानगानिसर्वजुलिः

वलिचिसिर्नरुद्रकाप्रानियकं रुद्रकाप्रानियकं पितृकिः शियकूलसहितं स
यव(ग)पियकं ॥ सनाथासर्वकारं पितृगणसकलं रुचवासर्वदवा लक्ष्मी
सकानवृद्धिः सकलसुखरुचवृद्धिं नजालक्ष्मी ॥ मनुहीनं विद्याहीनं
दयहीनं ग(धे)वय ॥ नयमुसर्वसंयुक्तं दमगां पितृनाजनां ॥ नमस्तु
नक्रवा ॥ ॥ धनागकियाक अल्लाकायाव चयूयजायागवर्न आचार्य
ग ॥ गणवाढसर्वस धनारुद्रुधियाय ममाल ॥ चयूयासनमङ्गार्थ ॥ धर्म
ली कलशकुरु कूलविधु गकि पितृपुत्रिवाङ्गल मूलगिराध्वनं
रुचयूयासन ॥ कूलविधुसदृक् पितृधवर्ग वियावधायनयक

दवाधियं श्वज ॥ रुद्रादि रुद्र सनुस्य विनयनमः ॥ ॥ द्वा ॥
 डाग्री सऊऊमानस्य मगव ॥ धनाय यनधिय ॥ कर्तृकान्त ॥
 न्निधिरमायूजाकलपिण्डा इति समाप्तः ॥ शुरुमस्तु सर्वदा ॥

॥ दक्ष भूगर्भनिगमः ॥